P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नैतिक शिक्षा के विविध आयाम एवं विश्वशान्ति

सारांश

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से प्रेरित नैतिक शिक्षा विश्वशान्ति एवं सुशासन के लिए अत्यावश्यक है। नैतिक शिक्षा के विविध आयाम हैं– अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, सामाजिक सेवा, महापुरुषों की जीवनी तथा क्रोध, मान, माया, लोभ की निवृत्ति आदि। यदि बच्चों को प्रारम्भ से ही ऐसी शिक्षा दी जाए तो उनका नैतिक उत्थान होगा, यदि उनका नैतिक उत्थान होगा तो विश्व का नैतिक उत्थान स्वयं हो जाएगा, क्योंकि ये बच्चे ही विश्व के भावी निर्माता हैं। यदि आज मनुष्य अपने जीवन का मूल मन्त्र 'जियो और जीने दो' बना ले तो विश्व में शान्ति एवं सुशासन स्वयं स्थापित हो जाएगा।

मुख्य शब्द : नैतिक शिक्षा, विश्वशान्ति, अहिंसा, सत्य।

रुक्मिणी
ऐसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
पी.जी.डी.ए.वी0 कॉलेज,
(सांध्य),
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

अर्चि भाटिया
असिस्टेंट प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग,
रामजस कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रस्तावना

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से प्रेरित नैतिक शिक्षा विश्वशान्ति के लिए अत्यावश्यक है। यदि हम सभी प्रकार के स्वार्थों से ऊपर उठकर सम्पूर्ण वसुधा को, सम्पूर्ण विश्व को अपना कुटुम्ब मान लें और उसी के अनुरूप आचरण करें तो अवश्य ही हम विश्व में शान्ति की स्थापना और सुशासन कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक शिक्षा को जोड़ने की। यदि प्रारम्भ से ही बच्चों को शिक्षा के विभिन्न आयाम के साथ नैतिक शिक्षा भी दी जाए और उसे बच्चों के लिए आवश्यक कर दिया जाए तो अवश्य ही वे बच्चे देश के और विश्व के भावी निर्माता बनकर विश्वशान्ति की ओर अग्रसर होंगे।

अध्ययन का उद्देश्य

आज विश्व में चारो ओर अराजकता व्याप्त है विश्व शान्ती में कहीं आतंकवाद व्यवधान पैदा करता है तो कहीं उग्रवाद एवं कट्टरवाद। आज की युवा पीढ़ी भौतिकता की चकाचौंध में अपनी संस्कृति, अपनी परम्परा अपने गौरवमय इतिहास तथा अपने नैतिक मूल्यों को भुलती जा रही है। ऐसे में आवश्यकता है आज की युवा पीढ़ी को नैतिक शिक्षा देने की जिससे उन्हें नैतिक पतन से बचाया जा सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर यह आलेख लिखा है।

विश्वशान्ति स्थापित करने के लिए मूलभूत सिद्धान्त यह है कि व्यक्ति को व्यक्ति से और एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से भय न रहे तथा संसार भर के मनुष्यों को जीवनयापन की अनिवार्यताओं की पूर्ति का आश्वासन प्राप्त हो। नैतिक शिक्षा में नैतिक से तात्पर्य है – नीति सम्बन्धी। नीति से तात्पर्य है– व्यवहार का ढंग या बर्ताव का तरीका अथवा लोकाचार की वह पद्धति जिससे अपना कल्याण हो और दूसरे को हानि न पहुँचे अर्थात् जो सन्मार्ग पर ले जाए वह नीति है। नीति सम्बन्धी कुछ बातें सभी के लिए सामान्य हैं, चाहे वह किसी भी धर्म या सम्प्रदाय को मानने वाला हो। प्रत्येक धर्म व सम्प्रदाय में नैतिक शास्त्रें का महत्त्व है। नीति समबन्धी कुछ बातें ऐसी हैं, जिन्हे सभी मानते हैं, जिन्हें कोई झुठला नहीं सकता। आज बच्चे जिस परिवेश में पल रहे हैं, जिस परिवेश में उनका पालन–पोषण हो रहा है, उसमें नैतिकता पीछे छूटती जा रही है। इसलिए बच्चों को आज नैतिक शिक्षा की बहुत आवश्यकता है। जैसे क्यारी में जैसा बीज डालेंगे, वैसा ही पौधा उतपन्न होगा, उसी प्रकार यदि बच्चों को बचपन से ही नैतिक शिक्षा भी दी जाएगी तो वे अवश्य ही विश्वशान्ति और सुशासन की ओर अग्रसर होंगे और विश्व में शान्ति स्थापित करने में अपना अपूर्व योगदान दे सकेंगे। नैतिक शिक्षा के विविध आयाम हैं, इनमें से कुछ आयाम प्रस्तुत हैं –

अहिंसा

'प्रमत्तयोगात्प्राण–व्यपरोपणं हिंसा'–उपास्वामि, तत्त्वार्थ सूत्र, अर्थात् अपने व दूसरों के प्राणों का घात करना हिंसा है। हिंसा के न होने को अहिंसा कहते हैं। जैन धर्म और बौद्ध धर्म का मूलभूत सिद्धान्त है अहिंसा। सभी महापुरुषों ने अपने जीवन में इस अहिंसा को अपनाया। भारत को परतन्त्रता से मुक्त कराने

वाले महात्मा गांधी जी का भी प्रमुख शस्त्र अहिंसा ही था। सम्राट् अशोक भी जीवन भर अपने देश की सीमाओं को बढ़ाने के लिए युद्ध करते रहे, लेकिन उन्हें शान्ति नहीं मिली। अन्त में उन्होंने अहिंसा का मार्ग अपनाया और जगह–जगह शान्ति स्तूप बनवाये। अहिंसा का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो केवल दूसरों को मारना ही नहीं बल्कि स्वयं को मारना भी हिंसा है। भाव हिंसा भी हिंसा है अर्थात् किसी को मारे नहीं, लेकिन उसको मारने के लिए मन में भाव ही आ जाएँ तो वह भी हिंसा है, क्योंकि कर्म की अपेक्षा भाव अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। पहले भाव बनते हैं, बाद में उन्हें क्रियान्वित किया जाता है। इसी प्रकार केवल स्थूल रूप से मारना ही नहीं बल्कि मन को दुःखाना भी हिंसा है और दूसरों के मन को ही नहीं, अपने मन को दुःखाना भी हिंसा है। यदि इस तरह की शिक्षा बच्चों को दी जाएगी तो वे अवश्य ही जीवन में हिंसा नहीं करेंगे। उनका व्यवहार केवल मानव के प्रति ही नहीं, पशु–पक्षी तथा वनस्पति जगत् के प्रति भी अहिंसक होगा और यह विश्वशान्ति में एक कारगर कदम होगा।

सत्य

'सत्यमेव जयते' अर्थात् सत्य की ही विजय होती है। सत्य का जीवन में बहुत महत्त्व है। हमेशा सत्य बोलना चाहिए, सत्य के मार्ग पर ही चलना चाहिए। यद्यपि सत्य का मार्ग बहुत कठिन है, लेकिन जो इस मार्ग पर चलता है, हमेशा विजय उसी की होती है। सत्य के मार्ग पर चलते हुए मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सन्तोष तथा गर्व का अनुभव होता है। महापुरुषों ने अपने जीवन में सत्य के मार्ग को अपनाया। जैसे – महात्मा गांधी, नैलसन मंडेला, फादर मून, मदर टेरेसा आदि अनेक महापुरुष। सत्यवादी हरिश्चन्द्र के नाम से कौन सुपरिचित नहीं है, जिन्होंने सत्य के लिए अपने बेटे तथा पत्नी तक को न्यौछावर कर दिया। सत्य कैसा हो – 'सत्यं ब्रुयात् प्रियं ब्रुयात्' अर्थात सत्य बोलो लेकिन प्रिय सत्य बोलो, ऐसा हमारे नीति–ग्रन्थ कहते हैं। जो सत्य किसी के लिए हानिकारक बन जाए, वह सत्य निरर्थक है। जो असत्य किसी के लिए कल्याणकारी हो, वह अधिक श्रेष्ठ है। जैसे – यदि कसाई गाये के पीछे दौड़ रहा है और गाय उसकी आँख से ओझल हो जाती है और वह कसाई किसी से गाय के बारे में पूछे कि गाय किधर गयी है और वह व्यक्ति पता होते हुए भी कहे कि मैंने गाय को जाते हुए नहीं देखा, तो यह झूठ नहीं है, क्योंकि यहाँ वह कसाई के हाथों से गाय की रक्षा करना चाहता है। अतः यदि बच्चे इस तरह की शिक्षा प्राप्त करेंगे तो वे जीवन में सत्य के मार्ग पर चलकर अवश्य ही विश्व शान्ति में अपना योगदान देंगे।

अचौर्य

चोरी न करने को अचौर्य कहते हैं। दूसरों की वस्तुओं को बिना पूछे ग्रहण नहीं करना चाहिए। यहाँ तक कि जल और मिट्टी भी बिना पूछे नहीं लेना चाहिए। चोरी करना नैतिक एवं कानूनी अपराध है। बच्चो को इस बात की समझ नहीं होती है। इसके लिए माता–पिता एवं गुरुजनों को ही बच्चे में बचपन से ही ऐसा आदत डालनी चाहिए कि वह दूसरों की चीजें न लें। बच्चों में क्या बड़ों में भी दूसरों की वस्तुओं के प्रति आकर्षण होता है। यह आकर्षण चोरी में परिवर्तित न हो जाए, यह देखना माता–पिता का काम है। यदि हम महापुरुषों की जीवनी या आत्मकथा पढ़े तो हम पायेंगे कि कुछ महापुरुष ऐसे भी हुए हैं, जिन्होंने बचपन में चोरी की, लेकिन उनके माता–पिता ने उन्हें वहीं रोक दिया, उनकी इस आदत्त को विकसित नहीं होने दिया और वह महान् व्यक्ति बन गये। आज जल और मिट्टी (धरती) को लेकर देश–विदेश में कितना विवाद है, यदि मनुष्य दूसरे का जल और मिट्टी चुराना छोड़ दे, अपनी सीमाओं में ही संतुष्ट रहकर दूसरों की सीमाओं में घुसपैठ छोड़ दे तो विश्व में शान्ति हो जाए और सभी निर्भीक रूप से रह सकेंगे। यह तभी हो सकता है जब बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जाए।

अपरिग्रह

आवश्यकता से अधिक धन का संचय न करना अपरिग्रह है। अर्थात् जीवनयापन की अनिवार्यताओं मात्र की पूर्ति व उनके संचय और संरक्षण के प्रति सचेष्ट रहना व अनावश्यक वस्तुओं के संग्रह से निवृत्ति अपरिग्रह है। आज मँहगाई के चक्र में पिसती जनता, कठिनाइयों से जूझता प्रत्येक प्राणी, अभावों में जीवनयापन करता हुआ मानव यह सोचने के लिए व्याकुल हो उठा है कि आखिर इतनी अशांति का कारण क्या है? वह इसका उत्तर पाने के लिए आकुलित है। इस प्रश्न का समाधान आज विद्वज्जनों के भाषण में तो मिल ही जाता है। आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व महावीर स्वामी ने अपरिग्रह का सिद्धान्त देकर जनता के समक्ष इस प्रश्न का समाधान रखा है। आवश्यकतानुसार रखो, ज्यादा संचय मत करो। इसी अर्थ को लेकर यदि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से और एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से व्यवहार करे तो आपस में मुठभेड़ की संभावना नहीं हो सकती। इससे भी परे भय की प्रवृत्ति हमें परिग्रहवाद का सहारा लेने को प्रवृत्त करती है। सभी राष्ट्रों और मनुष्य मात्र के चित्त यदि इस भय से मुक्त हो जायें कि जीवनयापन की उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में कोई हस्तक्षेप नहीं हो सकता तो परस्पर सद्भाव की भावना सहज ही पनप सकती है। अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय नेता यह अनुभव करते हैं और वे अपने भाषणों में जनसाधारण को समझाते हैं कि अपनी आवश्यकता मात्र के लिए वस्तुओं का संग्रह कीजिए। क्योंकि एक का संग्रह दूसरे के लिए अभाव बन जाता है। आज बहुत लोगों का पैसा विदेशी बैंकों में पड़ा है, जो न तो उनके काम आयेगा और न दूसरों के। इस मन्तव्य को मनुष्यों को मन में बैठाने के लिए पाठशालाओं से लेकर संसद तक इसकी समुचित शिक्षा की योजना सरकार को बनानी चाहिए। तभी मनुष्यों के मन भयमुक्त होकर आश्वस्त हो सकेंगे। इस प्रकार की प्रवृत्ति जगने पर परिग्रह संचय और संरक्षण के प्रति मनुष्य की आस्था क्षीण होगी, जिसके फलस्वरूप उसका समान उपभोग व वितरण सहज ही हो सकेगा। जब एक–दूसरे के प्रति भय समाप्त होगा तो कोई युद्ध आदि की संभावना का प्रश्न ही नहीं होगा। तभी हम विश्वशान्ति और सुशासन स्थापित करने में समर्थ होंगे।

सामाजिक सेवा

दया, प्रेम करुणा, सहानुभूति आदि मनुष्य के गुण हैं। इन्हीं गुणों के कारण मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न है,

यदि वह इन्हें छोड़ देता है तो वह अपने मानवीय स्तर से गिर जाता है। इसलिए हमें दीन–हीनों के प्रति दया का भाव रखकर उनकी सहायता करनी चाहिए, वृद्धों का सम्मान करना चाहिए, रोगियों तथा अनाथ बच्चों की सेवा करनी चाहिए। मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म सेवा है, इसलिए अनेक महापुरुषों ने अपना सम्पूर्ण जीवन दूसरों की सेवा में ही व्यतीत कर दिया, इसी में उन्होंने अलौकिक सुख का अनुभव किया। इन महापुरुषों में मदर टेरेसा, फादर मून, मदर मून, महात्मा गांधी, बाबा आम्टे, नैलसन मंडेला आदि को स्मरण किये बना नहीं रहा जा सकता। यदि बच्चों को प्रारम्भ से ही सेवा भाव की शिक्षा दी जाए, उन्हें संस्कारित किया जाए तो निश्चित रूप से हम विश्वशन्ति की कल्पना कर सकेंगे, क्योंकि ये बच्चे ही विश्व निर्माता होंगे। इसके साथ–साथ माता–पिता एवं गुरु के प्रति आदर का भाव भी आवश्यक है। नीति–ग्रन्थों में कहा है–

'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव।
गुरु देवो भव, अतिथि देवो भव'।।

ईश्वर के बाद जीवन में माता–पिता का ही महत्त्व हैं, वे ही उसका पालन–पोषण करके उसे बड़ा करते हैं, उसे संस्कारित करते हैं, उसको उसका रूप देने में सहायक होते हैं, निमित्त होते हैं। आज आये दिन समाचार–पत्रें में ऐसी घटनाएँ पढ़ने को मिलती हैं कि सन्तान ने ही माता–पिता की हत्या कर दी। यदि उन्हें सही शिक्षा मिले तो शायद ऐसी घटनाएँ न हों। नीति–गन्थों में लिखा है – सौ वर्षों तक भी लगातार माता–पिता की सेवा करके हम उनके ट्टण से उट्टण नहीं हो सकते। इसलिए जीवन में कभी माता–पिता की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए। उनकी मार, उनकी डाँट भी हितकारी है, उनके क्रोध में भी हित छिपा है, उनके ह्रदय से निकला आशीर्वाद दुनिया के किसी धन से कम नहीं। गुरु तो देवता के समान होता है। संतों ने गुरु को ईश्वर से भी अधिक महत्त्व दिया है। कबीर कहते हैं –

'गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।'

– कबीरदास

अर्थात् गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताता है, यदि गुरु ही नहीं होगा तो ईश्वर तक अर्थात् अपने लक्ष्य तक कैसे पहुँचेंगे। किसी भी साधना के लिए गुरु तो चाहिए ही। एकलव्य को प्रत्यक्ष रूप से गुरु नहीं मिले तो परोक्ष रूप में ही गुरु की मूर्ति बनाकर उनसे धनुर्विद्या सीख ली। मास्टर बलास्टर सचिन ने भी अपने महाविाई समारोह में अपने कोच (गुरु) का स्मरण किया, उनका अभिवादन किया। निश्चित रूप से इस तरह की शिक्षा से बच्चे विनम्र होंगे, क्योंकि 'विद्या ददाति विनयं, विनयं ददाति पात्रताम्।'

यही विनम्रता बच्चों को शान्ति और सुशासन के मार्ग पर अग्रसर करेगी।

महापुरुषों की जीवनी

हमें अपने विचारों का संस्कार करने के लिए, उन्हें परिमार्जित करने के लिए, उन्हें उच्च बनाने के लिए सत्साहित्य की आवश्यकता होती है। बच्चों के लिए सबसे अच्छा है महापुरुषों की जीवनी व आत्मकथा पढ़ें। इससे हमें प्रेरक प्रसंग व घटनाएँ मिलती हैं, जिनसे हम प्रेरित होते हैं। कभी–कभी हम किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं और निर्णय नहीं ले पाते हैं कि इन परिस्थितियों में क्या करें। ऐसे में यदि किसी महापुरुष के विषय में पढ़ा हुआ है तो एकदम ध्यान आता है कि अमुक परिस्थिति में अमुक महापुरुष ने ऐसा किया था तो हम भी ऐसा कर सकते हैं। महापुरुषों में अनेक धार्मिक, पौराणिक महापुरुष तथा इनके साथ अनेक महान् नेता, समाज सुधारक और दार्शनिक हुए हैं, जैसे महात्मा गांधी, नैलसन मंडेला, फदार मून, मदर टैरेसा, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती, राजा राममोहन राय, अरविन्द घोष, शंकराचार्य, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, लालबहादुर शास्त्री, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और आजकल अन्ना हज़ारे, मदर मून, ए–पी–जे– अब्दुल कलाम आदि। इन महापुरुषों का जीवन त्यागमय रहा है, इन्होंने जीवन में भोग को नहीं त्याग को महत्त्व दिया है। आज बच्चे आध्यात्मिकता और त्याग को भूलकर भोग की और अग्रसर हो रहे हैं। इसलिए आवश्यकता है उनकी शिक्षा में ऐसे प्रेरक प्रसंग जोड़ने की, जिससे उनका नैतिक उत्थान हो और वे विश्वशान्ति के लिए प्रयासरत हों।

क्रोध, मान, माया, लोभ से निवृत्ति

क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है, इसमें मनुष्य अपना विवेक खो देता है। इसमें लिया गया निर्णय कभी ठीक नहीं होता, दुःख का कारण होता है। इसी प्रकार मान अर्थात् अहंकार भी मनुष्य का प्रबल शत्रु है। कबीर कहते हैं –

'जब हरि था तब मैं नाही, जब मैं हूँ तब हरि नाहीं।'

– कबीरदास

इसी तरह माया के वशीभूत होकर भी मनुष्य ठीक निर्णय नहीं ले पाता। कबीर कहते हैं –

'माया महाठगनी हम जानी।' – कबीदास

लालच तो मनुष्य का बहुत विनाश करता है, इन सबको छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। यदि बच्चों को इन सबके भयावह परिणाम से अवगत करवाया जाए, तो वह इन सबसे बच सकेंगे और अपना व दूसरों का जीवन सुखपूर्वक, शान्तिपूर्वक यापित करेंगे।

यहाँ मैंने अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, सामाजिक सेवा आदि नैतिक शिक्षा के कुछ आयाम प्रस्तुत किये। आशा है यदि मनुष्य इनमें से कुछ को भी अपने जीवन में अपना ले तो अवश्य ही उनका नैतिक उत्थान होगा और उनका नैतिक उत्थान होगा तो देश का नैतिक उत्थान होगा और देश का नैतिक उत्थान होगा तो विश्व का नैतिक उत्थान स्वयं ही हो जाएगा। यदि ऐसा हुआ तो भविष्य में 11 सितम्बर की अमेरिका की घटना और 26 नवम्बर की मुम्बई की घटना की पुनरावृत्ति नहीं होगी। महावीर स्वामी का सन्देश 'जियो और जीने दो' 'Live and Let Live" को मनुष्य अपने जीवन का मूलमन्त्र बना ले तो कहीं अशान्ति नहीं होगी, चारों तरफ विश्व में शान्ति ही शान्ति होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *आचार्य उमास्वामी, 'तत्त्वार्थसूत्र', संपादक–पंडित कैलाशचन्द्र शास्त्री*

2. *कबीर ग्रंथावली, संपादक– डॉ– माता प्रसाद गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, फरवरी 1969*
3. *भर्तृहरि 'नीतिशतक', प्रकाशक– हिन्दी पॉकेट बुक, 2010*
4. *नारायण पंडित, 'हितोपदेश' प्रकाशक–चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2010.*
5. *तैत्तिरीय उपनिषद्, अनुवादक–अल्लदी महादेवा शास्त्री, प्रकाशक–समता बुक्स*
6. *मोहनदास करमचन्द गांधी, "सत्य के प्रयोग" राजपाल पब्लिशिंग, जनवरी 2008.*